व्हेल सेवन के लायक नहीं रहीं

फैरो द्वीप के मुख्य चिकित्सा अधिकारी ने घोषणा की है कि कुछ प्रमुख व्हेल मछलियां आने वाले दिनो में मानवीय भोजन के लिए उचित नहीं होंगी। द्वीप के ही कुछ वैज्ञानिकों ने यह उजागर किया है कि वे विषैली हो रही हैं।

स्कॉटलैण्ड और आइसलैण्ड के मध्य फैले दूरस्थ द्वीपों में से यह एक द्वीप है जिनमें परम्परागत रूप से व्हेल का शिकार होता रहा है। प्रति वर्ष यहां हज़ारों की संख्या में छोटी पायलट व्हेल मछलियों का शिकार किया जाता है और फैरो द्वीप वासी बड़े चाव से इन्हें खाते हैं।

व्हेलिंग विरोधी समूह के लोग काफी समय से इसका विरोध कर रहे हैं लेकिन फैरो के लोग तर्क देते हैं कि व्हेल का शिकार तो हमारी संस्कृति का हिस्सा है। लगभग इसी प्रकार का तर्क जापान और नार्वे के लोग भी देते हैं जो व्हेल के सबसे बड़े शिकारी हैं।

द्वीप के मुख्य चिकित्सा अधिकारी पाल वाइहे और हॉग्नी डेबेस जोनसेन ने अपने वक्तव्य में बताया है कि व्हेल के मांस और वसा में पारे, पीसीबी और डीडीटी के उत्पादों की मात्रा इतनी अधिक है कि इनका सेवन मनुष्य के लिए सुरक्षित नहीं है। यह रिपोर्ट प्रस्तुत करके सलाह देते हुए उन्होंने दुख व्यक्त किया है कि ये वही पाइलट व्हेल हैं जिन्होंने सदियों से द्वीपवासियों का पेट भरा है।

फैरो वासियों पर इन विषैले पदार्थ के प्रभाव का अध्ययन करने पर पाया गया कि पारा सेहत पर सबसे घातक असर डालता है। इसके चलते भ्रूण के तंत्रिका तंत्र का विकास प्रभावित होता है, यहां तक कि यह क्षतिग्रस्त भी हो सकता है। इससे बच्चों में प्रतिरक्षा तंत्र, उच्च रक्त चाप, पार्किन्सन की बढ़ती दर, परिसंचरण तंत्र की समस्याएं और वयस्कों में नपुंसकता की सम्भावना बढ़ गई है।

स्वास्थ्य अधिकारियों का कहना है कि इस प्रदूषण के लिए फैरोवासी ज़िम्मेदार नहीं हैं। बहरहाल ये परिणाम हमें आगाह करते हैं कि विश्व स्तर पर प्रदूषण पर प्रतिबंध सम्बंधी कानूनों को सख्त करने की ज़रूरत है। हमे स्वयं अपने क्रियाकलापों के परिणामों को स्वीकार करना होगा। ***(स्रोत फीचर्स)***